हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श

डॉ. संतोष बबनराव माने
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज ,कोल्हापुर.
(महाराष्ट्र)
मो.9552093972

शोध सार-

आज का वैज्ञानिक युग भौतिक साधनों को लेकर हमे आकर्षित करता रहा है|इन साधनों की प्राप्ति करके अपने भोग विलास को पूरा करने में जादा सक्रिय मनुष्य जीव ही है |वैसे इस सृष्टि में लाखो,करोडो जीव- जंतु हैं,पर मनुष्य जीव को छोडकर किसी अन्य जीव ने सृष्टि या पर्यावरण को बाधा नहीं पहुचाई है| प्रकृति ने इस सृष्टि के जीवों को खेलने,भोगने के लिए अपना निर्माण किया है परंतु आज मनुष्य ने अपने खुद के स्वार्थी जीवन को भोगने के लिए खुद के साथ अन्य जीवों के जीवन को भी हानी पहुँचाने का प्रयास शुरु किया है|प्रकृति या पर्यावरण का यह पेड काटता मनुष्य अपनी मनुष्यता को भूल रहा है|सृष्टि के सारे जीव खतरे में है और इसका बचाव सिर्फ प्रकृति,पर्यावरण की रक्षा और विकास पर ही संभव है|

बीज शब्द: साहित्य, पर्यावरण,प्रकृति

प्रस्तावना-

इस 21 वी सदी में पर्यावरण की हालत इतनी कमजोर होती दिखाई देती है की आज सारा विश्व,सृष्टि ज्वालामुखी के द्वार पर खडी है|मनुष्य-मनुष्य,समाज-समाज,देश-देश में द्वंद्व भी है और अंतद्वंद्व भी है| विज्ञान को साकार करने मे या प्रगति की राह पर दौडने वाला युग साक्षर है या निरक्षर यह प्रश्न निर्माण हुआ है| अपने गृह अर्थात पृथ्वी पर यह पर्यावरण विराजमान है| हमे ज्ञात है कि कभी पहले इस पृथ्वी पर 43% प्रतिशत जंगल था| इस पृथ्वी पर संतुलित जीवों को रहने के लिए 34 प्रतिशत जंगल होना चाहिए, परंतु आज 28 प्रतिशत के कम जंगल बचे है| इससे स्पष्ट है कि अन्य जीवों के साथ मानव जीव भी संकट मे आया है| प्रकृति अथवा पर्यावरण मे हवा, पानी, जंगल, नदी, पहाड, के साथ अन्य जीवों पर मानव जीवन बसा है| फिर भी पृथ्वी पर गांव शहर के बढते विकास के साथ आद्योगिकरण, भूमंडलीकरण से जंगल खत्म होते जा रहे है| प्रकृति के इस पर्यावरण को खत्म करके मनुष्य अपनी भौतिक सपनों को पूरा कर रहा है| भौतिक साधनों को प्राप्त करने के लिए वह पर्यावरण को हानी पहुँचाकर उसे नष्ट करता यह वैज्ञानिक युग आगे बढा रहा है| परिणाम प्रदूषण जैसी महासमस्या मे जल, थल, हवा आ चुकी है| जब से मानव-जाति का आरंभ होकर साहित्य साधना का निर्माण होता रहा है| तब से हमारे महान ऋषियों, आचार्यो, संतो, कविओ, लेखकों ने पर्यावरण को बचाने के लिए मनुष्य को सावधान करने का प्रयास किया है|

हिंदी साहित्य में भी पर्यावरण का महत्व बताने का प्रयास आरंभ से होता रहा है| पर्यावरण के लिए अंग्रेजी भाषा में Environment शब्द प्रचलित है| "इसमे किसी जीव के चारों ओर उपस्थित समस्त जैविक तथा अजैविक पदार्थों को पर्यावरण के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है| इस प्रकार जल, वायु, भुमि उनके पारस्परिक संबंध, अन्य वस्तुओं जैसे जीवों, सम्पति तथा मनुष्यों के आपसी संबंधों को मिलाकर ही पर्यावरण का निर्माण होता है|" 1 इसी पर्यावरण पर जीव या जीवन आधारित है| पर्यावरणों के साधनों में वन, जल, वायु, खनिज, खाद्य, उर्जा और भुमि महत्वपूर्ण रही है| हर एक साधन इस इस पर्यावरण का मूलभूत अंग है| इन्ही अंगो को काटकर ही मनुष्य विज्ञान युग के शिखर की ओर बढ रहा है| आज यह सभी साधन प्रदूषण की समस्या से त्रस्त है| परिणाम सृष्टि का जीव और जीवन खतरे में आ चुका है| जीवन के इस चक्र को संतुलित रखने के लिए पृथ्वी पर पेडों का जादा होना जरुरी, जंगलों का स्थान बढना आवश्यक है| कभी हमारा भारत देश वनो से ओतप्रोत था| परन्तु देश-विदेश आक्रमण, सत्ता, खिलवाड से यह वन कम होते जा रहे है| "देश में कुल 19 फिसदी वन है जिनमें से 11 फिसदी घने तथा 8 फिसदी छितरे हैं| राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार कम से कम 33 फिसदी भुमि पर वन होने चाहिए|" 2 आज इस देश में 28 फिसदी से भी कम वन बचे है| परिणाम इस देश में पर्यावरण के जो साधन है हवा, पानी, नदी सब प्रदूषित है| इसीकारण अनाज देनेवाली यह भुमि कमजोर बनती जा रही है|

" माँ तो तुम उनकी भी हो
पर वे दुर्बुध्दि भस्मासुरी बेटे तुम्हारी
नहीं जानते
नहीं मानते इस रिश्ते को
वे तुम्हारा दूध पीने की जगह

तुम्हारे स्तन काटकर
उनका मुलायम मास खा जाना चाहते है|" 3 - रणजित

गौन खनिजो की लालसा ने पहाड, भुमि, मैदानो को नष्ट किया जा रहा है| बडे-बडे महल, कारखानों का निर्माण हो रहा है| पानी और इंधनों के लिए इस भुमि को काटा जा रहा है| वैश्वीकरण के इस युग में मनुष्य ने अपनी काम वासनाओं को पूरा करने के लिए पर्यावरण का शिकार करना शुरू किया है| मनुष्य की सारी इन्द्रियों की इच्छा कामवासना ही है| अन्य जीवों को छोडकर यह राक्षसी वृत्ती सिर्फ इन्सान के पास है| इसका कारण मनुष्य के पास दिमाग है सोच है जो अन्य जीवों के पास नही है ऐसा हमारा मानना है| प्रकृति ने सिर्फ इन्सानो को सोचने के लिए दिमाग दिया है इसे हम शाप या वरदान भी कह सकते है| यह भुमि (पृथ्वी) मनुष्य का पेड, पौधे, पशु, पक्षी, प्राणी यहा तक की वायु, जल, उर्जा, अनाज का निर्माण करके सबका पालन पोषण करती है| आज हमने इसी सजीव पृथ्वी-भुमि को निर्जीव बनाने का संकल्प लेकर बढ रहे है|

औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, भुमंडलीकरण के इस विकास युग मे सारे विश्व में तापमान बढने की समस्या निर्माण हुई है| पृथ्वी के बढते तापमान का कारण पर्यावरण प्रदूषण है| आज इस प्रदूषण से सारी जीव सृष्टि नष्ट होने की कगार पर है| पर्यावरण प्रदूषण में देखा जाए तो बढते शहर, उद्योग से जंगल समाप्त हो रहे है| "धरती के तापमान में 0.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की गई है तथा अगले सौ सालों में इसमें 5.8 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि हो सकती है| भारत का तापमान हर सदी में 0.57 डिग्री सेल्सियस की गति से बढ रहा है| 2050 तक यह तीन डिग्री सेल्सियस बढ जाएगा|" 4 आज विश्व में बर्फ पिघलकर पानी का स्तर बढने की चिंता है| पानी के बढते स्तर से अनेक देशों के शहर डुबने की स्थिति पैदा हुई है और इसका कारण बढता तापमान ही माना जाता है| प्रदूषण के कारण दूषित पानी, जहरिली वायु, तापमान बढता जा रहा है| जिससे नई-नई बिमारी के साथ मानव हानि बढी है| "1953 में जापान के मिनामाटा शहर में प्रदूषित मछलियाँ खाने पर सैकड़ों लोगों को मौत का शिकार होना पडा| इस दृघटना से लगभग दो हजार लोग प्रभावित हुए| लगभग 50 से जादा लोगों की मृत्यु हो गई और लगभग 700 लोग स्थाई तौर से अपाहिज हो गए|"5 बडे-बडे कारखानों से निकलनेवाली हवा, प्रदूषित पानी से नदियों का पानी भी दूषित हुआ है जो इस प्रकार के हादसे बढते आ रहे है| बाढ, अकाल बदलते मौसम से मानव जीवन बिमारीयो मे फसता जा रहा है| फिर भी पर्यावरण बचाव यह सिर्फ विषय बनकर ही रहा है उसे कृतित्व में लाना असंभव बनता जा रहा है|

बढती आबादी से इस भुमंडलीकरण को रोकना, युद्ध को रोकने के बराबर हुआ है| आज हर एक राष्ट्र अपने आप को शक्तिशाली बनाने की चाहत रखता रहा है इसलिए उसने भूमि, सागर, अवकाश में भी कब्ज़ा करने के प्रयास में है| पर्यावरण सुरक्षा यह उसे नाममात्र के बराबर लगता है| आज मनुष्य का जीवन भौतिक साधनों से विकसित है| "वाहनों की संख्या बढ जाती है, जीवशेषीय इंधनों के स्फोट के साथ वायु-प्रदूषण में खास तोर से कार्बन डायऑक्साइड, नायट्रोजन ऑक्साइड में पच्चीस प्रतिशत की वृद्धि हुई है|"6 तंत्रज्ञान के विकसित साधनों से ऑक्साइड की मात्रा कम हो रही है| नायट्रोजन, कार्बन डायऑक्साइड निर्माण करनेवाले यंत्र मनुष्य ने बनाये है परन्तु उन्हें नष्ट करनेवाले पेडों को भी मनुष्य काट रहा है यह मानव जाति मे बडा आश्चर्य है| हमारे देश के साथ अन्य देश भी बढती आबादी से खेती विकास को महत्व दे रहे है| अनाज उत्पत्ति बढाना मकसद है परन्तु इस मकसद को दिखाकर वनों, पहाडों को नष्ट किया जा रहा है और इस मकसद में मनुष्य की विकृत कामवासना ही रही है| बढते तापमान से हादसे बढ रहे है, कभी कारखानो में, बस में, रेल में, गाँव में तो कभी वन में आग लगती है और लाखों जीव मारे जाते है|

इस औद्योगिकरण युग में मानव जाति या अन्य जीवों को अगर बचाना है तो पहले हमें हमारे भौतिक साधनों से दूर होना आवश्यक है| भौतिक साधनों के बिना हम रह नही सकते यह बात सच भी है परन्तु उन साधनों की संख्या या उपयोग कम कर सकते है| जल हवा के प्रदूषण को हम रोकते है तो यह जीव सृष्टि बच सकती है इसलिए पर्यावरण निर्माण हर एक देश का मिशन होना चाहिए| प्रत्येक व्यक्ति पेड का निर्माण करता है तो आनेवाली हमारी जाति भी जीवन का आनंद लेगी| पर्यावरण विकास में देश, संस्थाए योजना बनाते है लेकिन यह योजनाएं सजीव नहीं निर्जीव साबित हुई है| "पेड लगाना एक बात है मगर उस लगे पेड को जिन्दा रखना असल बात है| अपने देश 62 वनमहोत्सव मनाए जा चुके है| रिपोर्ट बताती है की खरबों पेड लगाए गए| मगर सच्चाई कुछ और है| पेड तो पहले वाले भी नहीं छोडे -सब कुल्हाड़ी को भेट चढ गए|"7 इस दौर में मनुष्य ने कृत्रिम साधनों को अपनाने के लिए प्रकृति को तोडना शुरू किया| कभी वन को नष्ट करके उद्योग खडा हुआ तो कभी पेड काटकर दलन-वलन को विकसित किया| रस्ते विकास के अभियान में बचे पेड भी कट रहे है| बरगद, पीपल जैसे महान पेड भी नही छुटे| पेडों को काटकर चलनेवाली यह सृष्टि कब रेगिस्तान बनेगी यह उसे पता होकर भी पता नही होगा| इस धरती के प्रकृति ने हमें बडे-बडे पेड-पौधे दिए| हमारे पूर्वजो ने इसे विकसित भी किया| यह पेड फुल, फल, अनाज, देते है| पर्यावरण प्रदूषण से यह नष्ट होने की आशंका है|

निष्कर्ष में यह सच है की पर्यावरण प्रदूषण बढ चुका है,बढ रहा है| पर्यावरण बचाव योजनाएं बनती भी है तो वह एक विषय बन कर चल रही है| आज विश्व के हर एक मनुष्य को पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर चितां होनी आवश्यक है| पहले महायुध्द

और दूसरे महायुध्द से किस तरह जीव-पर्यावरण हानि हुई है सबने देखी, सुनी है| फिर भी आज सारा विश्व तिसरे महायुध्द की ओर बढ रहा है| रहीम ने सच ही कहा है "रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सुन" अर्थात पानी अथवा जल का दुसरा नाम जीवन है| तो पहले हमें नदी, सागरों को प्रदुषण से बचाना है| पानी को ही प्रदूषण से बचाते है तो पेड-पशु-पक्षी-जीव का जीवन भी प्रदूषण मुक्त होगा| पहले तो जल हवा ही शुद्ध थी जिसकारण अनेक पशु-पक्षी प्राणी थे| मनुष्य की आयु भी बढी थी| आज प्रदूषण के कारण से ही मनुष्य की आयु कम हुई है यह बात समजना सहज ही है| बढती आबादी को नियंत्रीत रखना यह एक अच्छा सुझाव है| साथ ही भौतिक साधनों को कम करना यह भी संभव है| अब से हर एक व्यक्ति पेड लगाकर उसे विकसित करता है| तब पर्यावरण में सुधार आकर ही रहेगा, तभी हमारी नई पीढी भी प्रकृति का आनंद ले सकेगी| करोडों जीवों में मनुष्य के पास है दिमाग है| अगर वह अपनी सोच के बल पर पेड लगाना शुरू करे तो जल, हवा भी प्रदूषण मुक्त होगी| तभी मनुष्य को प्रकृति के साथ साथ अपने जीवन का आनंद प्राप्त होगा| तो हम सब को यही कहना होगा-

"में तुम्हे अपने लिए बचाना चाहता हूँ पृथ्वी
अपने बच्चों के लिए
उनके बच्चों के लिए
सब बच्चों के भावी बच्चों के लिए" - 'रणजीत'

संदर्भ ग्रंथ –

1. पर्यावरण अध्ययन - अनुभा कौशिक , सी.पी.कौशिक. पृष्ठ-1
2. पर्यावरण संरक्षण - सुमेर चंद पृष्ठ-107
3. पर्यावरण और विकास - डॉ.रणजीत,डॉ.भारतेदुं प्रकाश पृष्ठ-5
4. पर्यावरण संरक्षण - सुमेर चंद पृष्ठ-106
5. पर्यावरण अध्ययन - अनुभा कौशिक , सी.पी.कौशिक. पृष्ठ-134
6. पर्यावरण और विकास - डॉ.रणजीत,डॉ.भारतेदुं प्रकाश पृष्ठ-11
7. पर्यावरण संरक्षण - सुमेर चंद पृष्ठ-7